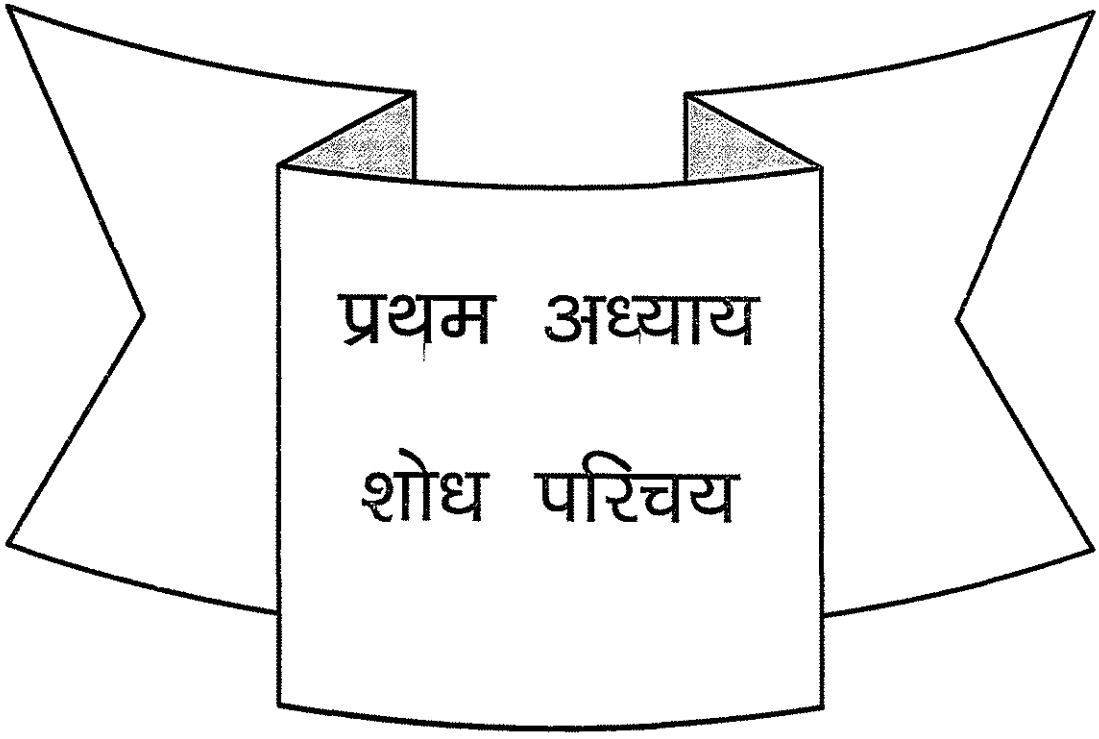
प्रथम अध्याय
शोध परिचय

अध्याय–1

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

"प्रार्थना बिना एक क्षण arrogance है,

क्रिया के बिना प्रार्थना दंभ है"

भारतीय परम्परा रही है कि किसी भी कार्य की शुभ शुरूआत प्रार्थना से होती है। अतः व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित हेतु दोनों ही रूपों में हमारे समाज में प्रार्थना का प्रचलन वैदिक काल से ही है।

प्रार्थना शब्द प्र+अर्थ+ल्यूट् प्रत्यय से बना हुआ है। जिसका अर्थ होता है – बिंनती करनात्र, निवेदन या स्मृति करना। प्राचीन काल से ही प्रार्थना का महत्व हमारे देश में प्रभावी रहा है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि प्रार्थना एक धार्मिक मूल्य है किसी सभ्य समाज के लिए शिक्षा प्राण है तथा मूल्य उसकी आत्मा। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का अन्तर्निहित शक्तियों का सर्वांगीण विकास करना है। अभिप्राय शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, भावात्मक, सामाजिक, नैतिक मूल्यों का विकास करना है। किसी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उसके द्वारा संजोए गए स्वप्नों की यर्थाथता का परिचायक है।

मनुष्य को आदर्श, चरित्रवान, नैतिक रूप से सशक्त बनाने का यदि कोई उपाय है वो वह है, मूल्य परक शिक्षा।

मूल्य परक शिक्षा का बीजारोपण परिवार से होता है। विद्यालयों में उसका पल्लवन होता है। तथा समाज का वातावरण में उसे सात्विकता मिलती है। इसीलिए कहा जाता है कि शिक्षा पर समाज का समाज पर मूल्यों का और मूल्यों का और मूल्यों पर समाज की अमित छाप रहती है। नैतिकता का जाप करने से नैतिकता नहीं आती। बल्कि बालकों में नैतिकता के विकास के लिए ऐसी परिस्थितियों का निर्माण कर देना चाहिए कि शिक्षा लेते समय स्वयं ही नैतिकता की अनुभूति कर सके।

वास्तव में शिक्षा का मूलधार व्यक्ति की आंतरिक भावनाएं एवं विचारधारा होती है। विद्यालय शिक्षा का एक सशक्त साधन है। इसकी समस्त गतिविधियाँ छात्रों में मूल्यों का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। छात्रों के संकुचित दृष्टिकोण को विस्तृत करने में सहयोग, सहानुभूति, श्रम की महत्ता, न्याय, आत्म–विश्वास, आत्म–नियंत्रण, सेवाभाव, ईमानदारी और मानवतावाद की भावना विकसित कर सकते है।मूल्य परक शिक्षा लच्छेदार भाषण देने से या कक्षाओं में बैठकर योजना बनाने से संभवनहीं है। मूल्य परक शिक्षा की पृष्ठभूमि में तो कर्तव्यपरायणता, त्याग, सहयोग, सहनशीलता, विनम्रता, समता आदि गुणो की आवश्यकता होती है। इन गुणों का अनुपाजन व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में करें इसके लिए व्यक्ति स्वयं,

Regional ... Education, Bhopal पुस्तकालय Library

अभिभावक, परिवार, समुदाय और शिक्षा संस्थाये अपने–अपने स्तर पर निरंतर प्रयास करें।

विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यक्रम (एन.सी.ई.आर.टी.2000) में प्रारंभिाक और उच्वत्तर माध्यमिक स्तरों पर विद्यार्थियों में नैतिकता व मूल्यों पर आधारित शिक्षा के प्रति सचेतना लाने के लिए निम्नांकित प्रयास शालाओं में करने चाहिए।

1. विद्यालयी सभा और समूह गान तथा मौन, ध्यान एवं सधना का अभ्यास करना चाहिए।
2. पैगम्बरों, संतो एवं पवित्र धर्मग्रंथो से जुड़ी रूचिकर कथाओं और जीवनियों का वर्णन करना चाहिए।

शिक्षक या अतिथि वक्ता द्वारा प्रातः कालीन सभा में ज्ञान युक्त पुस्तकों एवं महान साहित्य के अंशो का वाचन एवं उपयुक्त संबोधन करना चाहिए।

गांधीजी के शब्दों में कहे तो **"अगर भारत को अध्यात्म शून्य नहीं बनना है तो यहाँ के युवको को धार्मिक शिक्षण उतना ही आवश्यक है जितना धर्म निरपेक्ष शिक्षण।"**

इन सब बातों से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मूल्यों के विकास के लिए विद्यालयों में धार्मिक मूल्यों के रूप में प्रर्थाना का महत्व ही अनन्य है।

अतः प्रार्थना के महत्व को स्वीकार करके ही पाठ्यचर्चा 2005 शांति शिक्षा में प्रार्थना को विद्यालय के दैनन्दिन कार्यक्रमों में

स्थान दिया गया है। प्रतिदिन विद्यलय में अध्ययन-अध्यापन का प्ररंभ से पूर्व विद्यादेवी एवं सरस्वती की पूजा, आराधना व प्रार्थना होती है। इसे निर्विवाद रूप से प्रत्येक विद्यालय में स्वीकार किया गया है। प्रार्थना का तात्पर्य केवल प्रभु तक अपनी आवाज को सुनाना नहीं है, लेकिन उससे कुछ सीखना है और सिखाना है।

प्रार्थना के महत्व को स्वीकार करते हुए महात्मा गांधीजी ने कहा है कि -

".....दिन का काम प्रार्थना से शुरू कीजिए और उसमें इतनी आत्मा उड़ेलिए कि वह शाम तक आपको साथ बनी रहे। दिन का अन्त भी प्रार्थना के साथ कीजिए। ताकि आपकी रात शांतिपूर्वक तथा स्वप्नों तथा दुःस्वप्नो से मुक्त रहें। प्रार्थना के स्वरूप की चिंता न कीजिए। स्वरूप कुछ भी हो, वह ऐसा होना चाहिए, जिससे भगवान के साथ हमारे मन का लौ लग जाए। इतना ध्यान रखिए की स्वरूप कैसा भी हो मगर आके मूंह से प्रर्थना का शब्द निकलते समय आपका मन इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए। "(**भाषाण साबरमती आश्रम की प्रर्थना सभा में**)

माध्यमिक शिक्षा आयोग(1952-53) ने आपने प्रतिवेदन में सुझाव दिया है कि "प्रत्येक विद्यालय की दिनचर्या का आरंभ शिक्षकों व छात्रों की असेम्बली से होना चाहिए प्रतिदिन के कार्यो का घोषणा होती हैं।इस सभा का सदुपयोग प्रतिष्ठित व्यक्तियों के प्रेरणास्पद वार्तालाप से किया जाना चाहिए।"**श्री प्रकाश समिति(1956)** ने प्राथमिक स्तर पर इस की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए कहा कि "प्रतिदिन की सभा में

प्राथमिक विद्यालयों में समूह गान, सरस कहानियाँ, महापुरूषो की जीवनी दर्शाने वाली दृश्य–श्राव्य सामग्री आदि का प्रदर्शन किया जाना चाहिए।"

प्रार्थना एक मान्य विधान है, उसका स्वरूप सुनिश्चित है। उसका स्वरूप सुनिश्चित है! स्कूल ने प्रार्थना को एक दैनिक रस की तरह स्वीकार किया है। प्रार्थना की मनःस्थिति और मुद्रा को स्कूल ने बदलने की जगह आत्मसात कर लिया है। इसलिए कुछ होने का आभास देती है। प्रार्थना का प्रयोजन उसकी घोषित भावना का वास्तविकता, मनोवैज्ञानिक व्यंजनाएं क्या है। ऐसे प्रश्न स्कूल से संबंध ज्यादातर लोगों के मन में नहीं उठते। उनके लिए प्रार्थना इतनी पवित्र रस्म है कि उसकी परीक्षा नहीं की जा सकती है।

एक धर्म या संप्रदाय के नाम और पैसे पर चलने वाले स्कूलों में प्रार्थना की जरूरत समझी जा सकती है, किन्तु देश को लाखों सरकारी स्कूलों में भी प्रार्थना प्रतिदिन की जाती है। धर्मनिरपेक्ष तथा जानतंत्री शासन द्वारा नियंत्रित स्कूलो में प्रार्थनाए किसकी अभ्यर्थना करती है? इस तरह के आधारभूत प्रश्न पूछना भारतीय सामाजिक जीवन में स्कूल को समझने के लिए अनिवार्य है। इन प्रश्नो के सहारे ही यह जाना जा सकता है। कि भारत में स्वाधीनता के बाद स्वीकार किए गए राष्ट्रीय मूल्यों ने बच्चों की शिक्षा को किस हद तक तथा किस तरीके से प्रभावित किया है।

प्रार्थनासभा सभी सदस्यों में शांति और शक्ति का संचार करती है। इतना ही नहीं, प्रार्थना के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप में उन

संस्कारो को विकसित करने का प्रयास करता है जिन्हें हम जीवन मूल्य यानी विनम्रता, शिष्टता और अनुशासन कहते है। प्रार्थना के द्वारा विद्यालय के सभी सदस्यों में नैतिकबल और आत्मबल जागता है। प्राचार्य और शिक्षकगण मिलकर प्रार्थना सभा में विविधता और रोचकता लाकर प्रभावी संचालन करके प्रार्थना सभा को प्रभावशाली बना सकते है।

सांप्रतिक संसार मानवीय मूल्यों कर कमी के कारण अत्यन्त गंभीर संकट की स्थिति से गति होने के स्पष्ट लक्षण परिलक्षित हो रहे है। पुनश्य मानव के पास अध्यात्म के विषय में सम्यक् आबोध भी नहीं है जिससे वह अपना सर्वागीण व्यक्तित्व का विकास साधित कर सके क्योंकि आध्यात्म ही मूल्यों को संवर्धित करने का एकमात्र सशक्त साधन है। प्राचीन काल की शिक्षा परंपरा में मूल्यों को समंवित कर आचार्य शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते थे, परन्तु वर्तमान समय में मूल्यों के प्रति इतनी गंभीर अवहेलना प्रदर्शित की गई है कि उभरते छात्र व शिक्षक दोनो में चारित्रिक कलुषता स्पष्टत दृष्टि गोचर हो रही है। समाज में भी इसी नैतिक मूल्य भावजन्य चारित्रिक स्खलन के कारण अनेकानेक समस्याएँ दिन-प्रतिदिन दिखाई दे रही है।

शिक्षा जगत् समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष की आधार शिला है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में मनुष्य की अन्तः र्निहीत पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा का लक्ष्य ही है चारित्र निर्माण। आज तक के सभी शिक्षा आयोगों ने भी शिक्षा में आध्यात्मिकता को एवं मूल्यों को अनिवार्यता से स्वीकार किया है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के लिए

व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ी शर्त माना था। क्रवींद्र रवींद्रनाथ और ड़ॉ.राधाकृष्ण ने भी द्योषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरुंत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विनाश का कारण बनेगी। आज यही संघतित हो रहा है। सत्य, प्रेम तथा अच्छाई के मार्ग की बाधाओं को पार करने का सामर्थ्य एक मात्र विशुद्ध आध्यात्मिकता से संपन्न मूल्यनिष्ठ जीवन ही प्रदान कर सकता है। आज विशुद्ध आध्यात्मिकता को समझने और आत्मसात करने की शक्ति तैयारी और समय प्रायःदृष्टिगोचर नहीं हो रहा है क्योंकि आज का मानव आत्मा और शरीर का संबंध और उसकी सार्थकता को नहीं समझ पा रहा है।

इसी कारण लक्ष्य विहिनता है अज्ञान जनित भौतिक दौड़ की आँधी में अनीति भ्रष्टाचार एवं नैतिक चारित्रिक पतन के चक्रवाह में वास्तविक जीवनधारा चुकती जा रही है। आज की शिक्षा जीवन के डाल पाठ से शरीर व शरीर के संबंधो तक सीमित है। वस्तुतः जीवन का असली राज शरीर से विपरीत जीवन जड़ो में है– शरीर से भिन्न आत्मा और उसकी अनंत शक्तियों में है। सत्य भीतर है। जीवन की क्षमताएँ, सुगंध तो भीतर है, बाहर तो मात्र प्रतिछाया है। प्रकृति के तत्वों में भी अपनी नैसर्गिक गरिमा सौन्दर्य है– फूल में सुगंध, कोमलता, स्निग्धता, रंग और सौन्दर्य है। मानव का सौदर्य खो गया है। कारण पाश्चात्य सभ्यता और दुषित वातावरण का प्रभाव है। अतः आज के मानव का व्यक्तित्व खंडित व्यक्तित्व है। उदारता, सहयोग, धैर्य, और त्याग नहीं है। आज की शिक्षा एटम (अणु) की शिक्षा है, आतम (आत्मा) की नहीं। आजकी शिक्षा में अहंकार का पोषण है, देह–अभिमान है। मान–शान,

धन–सत्ता के पीछे दौड़ है जिसमें चारित्रिक गुणों का कोई स्थान नहीं है। इसके लिए उदारमता आत्यस्थ व्यक्तिओं को चिंतन कर अविलम्ब समाधान ढूँढना है। जीवन की पूर्णता का अर्थ है– भौतिक, मानसिक , सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की संपंनतापूर्ण समन्विति। समस्त मूल्यों का स्त्रोत मानवोपरि अलौकिक सतारूप एक परमात्मा ही है। अतः उसे जानकर उससे अपना जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करने के लिए मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा और आत्मवाद की पुनः प्रतिष्ठा ही यथार्थ जीवन मूल्य है, जो आसन संकट से मानवता की रक्षा कर सकता है।

21वीं शताब्दी में स्वर्णिम भारत के उदय की आधार शीला ऐसी ही मूल्य शिक्षा है। आज की शिक्षा मानव मूल्यों को छोड़, सब कुछ दे रही है। मूल्य नहीं तो मानवता नहीं, चरित्र नहीं, मानव की आन और शान नहीं। कोई भी राष्ट्र जनबल और धनबल से महान नहीं बनता। उसके लिए चरित्रबल ही चाहिए। इसी के अभाव में आज व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पूर्ण रूपेण विकसित, सुखी, समृद्ध नहीं हो पा रहे है। व्यक्ति और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन मूल्यों और चरित्र की सुवास फैलानी है, समग्र राष्ट्र और विश्व में नई चेतना, नया विश्वास, नई आशा और नई उम्मीदों की लहलहाती फसले तैयार करनी है, तो आज शिक्षा के क्षेत्रों को ही आगे आ कर आत्मवाद और परमरत्मावाद से निष्पन जीवन मूल्यों की प्रयोगशालाएँ सर्वत्र खोलनी पडेगी। अगर आज मानव को झकझोर कर जगाया नहीं गया तो अहंकार, क्रोध, स्वार्थ, लिप्सा और मोहांधता पूरी मानवता का विनाश करने के लिए सक्षम है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

प्रार्थना सभा से अभ्यास पर असर पड़ता है। प्रार्थना सभा में होनेवाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों जैसे राष्ट्रगान, समाचार वाचन, सर्वधर्म प्रार्थना हिन्दी प्रवचन, English प्रवचन, संस्कृत प्रवचन विभिन्न प्रकार के वाचन, प्रार्थना गान आदि से प्रशिक्षणार्थियों में कौशलों का विकास होता है और उनमें प्रार्थना सभा से धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य एंव राष्ट्रीय मूल्य का विकास होता है। इन गतिविधियों के कारण प्रशिक्षणार्थियों में विभिन्न कौशलों एवं मूल्य परिवर्तन होता है। यह कौशल एवं मूल्य उनके ज्ञान एवं अभिव्यक्ति का विकास होता है। पिछले कई वर्षो से गुजरात राज्य में प्रार्थना सभा कॉलेज एवं शालाओ में लागू की गई है। शोधकर्ता के द्वारा प्रार्थना सभा से होनेवाले लाभ को जानना तथा प्रार्थना सभा को जिस मकसद से लागू की गई है। वह सही में सफल साबित हुआ है या नहीं उसको जानना है।

1.3 समस्या कथन

बी.एड कॉलेज मे होनेवाली प्रार्थनासभा से प्रशिक्षणार्थियों में विकसित होनेवाले कौशलों एवं मूल्य परिर्वतन का अध्ययन।

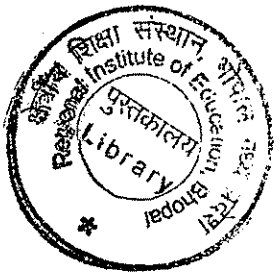

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education, Bhopal
पुस्तकालय
Library

1.4 अध्ययन के उद्देश्य

- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा का विश्लेषण करना।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा की गतिविधियों का अध्ययन करना।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा के प्रति महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिक्रिया को जानना।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा में महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की सहभागिता में अंतर पायाजाता है।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा से महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में विकसित होने वाले अभिव्यक्ति कौशल का अध्ययन करना।
- बी.एड. कॉलेज में होने वाली प्रार्थना सभा से महिला एवं पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में परिवर्तित होने वाले मूल्यों का अध्ययन करना।

1.5 शोध में प्रयुक्त शब्दावली की परिभाषा

कौशल

"जब से अध्यापन को एक संपूर्ण प्रक्रिया की बजाय विभिन्न अध्ययन कौशल्य का समूह समझा जाने लगा तब से ही कौशल आधारित अध्ययन का विस्तार प्रारम्भ हुआ सूक्ष्म अध्यायन की नींच

अध्यायन प्रक्रिया को विभिन्न घटक कौशल पर आधारित मानने और एक–एक कौशल का अलग–अलग अभ्यास करने की क्षमता पर आधारित है।"

टनी एवं अन्यों के अनुसार

"जब से अध्यापन को एक संपूर्ण प्रक्रिया की बजाय विभिन्न अध्यापन कौशल का समूह समझा जाने लगा तब से ही कौशल आधारित अध्यापन का विस्तार प्रारम्भ हुआ। सूक्ष्म अध्यापन की नींच अध्यापन प्रक्रिया को विभिन्न घटक कौशल पर आधारित मानने और एक–एक कौशल का अलग – अलग अभ्यास कसने कर क्षमता पर आधारित है।"

अभिव्यक्ति

"जब व्यक्ति ध्वनियों के माध्यम से मुख के अवयवों की सहायता से उच्चरित भाषा का प्रयोग करते हुए अपने विचारो को प्रकट करता है तब उसे मौखिक अभिव्यक्ति कहा जाता है।"

–अरस्तू

मूल्य

"मूल्य समाज द्वारा अनुमोदित उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किये जा सकते है जिन्हे अनुबन्धन,अधिगम या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आत्मसात किया जाता है और जो

व्यक्तिगत मानकों तथा आकांक्षाओं के रूप में परिवर्तित हो जाते है।"

–राधाकमत मुकर्जी

1.6 शोध की सीमाये एवं परिसीमायें

इस लघुशोध की निम्नलिखित परिसीमाएँ है।

- प्रस्तुत अध्ययन गुजरात राज्य के वल्लभ विद्यानगर की सरदार पटेल विश्वविद्यालय तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन सरदार पटेल विश्वविद्यालय के अशासकीय बी.एड. कॉलेज तक ही सीमित है।
- प्रस्तुतअध्ययन साल 2013–14 के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन सर्वधर्म समभाव का मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य,राष्ट्रीय मूल्य, एवं सामाजिक मूल्य तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन अभिव्यक्ति कौशल तक सीमित है।
- यह अध्ययन बी.एड. के 100 प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित है।
- यह अध्ययन बी.एड. कॉलेज की प्रार्थना सभा तक सीमित है।